Gyanvividha, Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026 : PP-307-315

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No.- 307-315
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

डॉ. विनय कुमार सिन्हा

सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग,
राजेन्द्र मिश्र महाविद्यालय, सहरसा, बिहार.

Corresponding Author :

डॉ. विनय कुमार सिन्हा

सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग,
राजेन्द्र मिश्र महाविद्यालय, सहरसा, बिहार.

महिला शिक्षा : राजगीर, नालन्दा जिले का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

सारांश : शिक्षा सामाजिक-आर्थिक विकास की आधारशिला है, साथ ही यह मानव को तार्किक और दूरदर्शी बनाता है। विशेष रूप से महिलाओं की शिक्षा परिवार कल्याण में सुधार, लैंगिक समानता को बढ़ाने और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने में एक परिवर्तनकारी भूमिका निभाती है **(Mondal Provashis 2021)**। यह शोध बिहार के नालन्दा जिले के एक अर्ध-शहरी इलाके राजगीर में महिलाओं की शैक्षिक भागीदारी को प्रभावित करने वाले सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक और बुनियादी ढ़ाँचे के कारकों की जाँच करता है और शिक्षा के माध्यम से सशक्तिकरण की रणनीतियों पर प्रकाश डालता है।

मुख्य शब्द : महिला शिक्षा, राजगीर, समाजशास्त्रीय अध्ययन, चुनौतियाँ।

भूमिका : शिक्षा को सार्वभौमिक रूप से एक मौलिक मानवाधिकार और व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण तत्व माना जाता है। महिलाओं की शिक्षा न केवल व्यक्तिगत विकास में योगदान देती है, बल्कि परिवारों, समुदायों और समग्र राष्ट्र को भी लाभान्वित करती है **(Desai, A.S 1999)**। राजगीर जैसे क्षेत्रों में जहाँ शहरीकरण पारंपरिक मूल्यों के साथ-साथ विद्यमान है, महिलाओं की शिक्षा का स्तर निरंतर सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन को दर्शाता है। वहीं यहाँ स्कूलों और कॉलेजों तक पहुँचने के बावजूद, आर्थिक तंगी, लैंगिक रूढ़िवादिता, सुरक्षा संबंधी चिंताएँ, घरेलू जिम्मेदारियाँ जैसी कई बाधाएँ महिलाओं की शिक्षा में भागीदारी को प्रभावित करती रहती है। इसलिए राजगीर में महिला शिक्षा का अध्ययन महिला सशक्तिकरण की जमीनी दिक्कतों और शिक्षा पर स्थानीय सामाजिक वातावरण एवं विकास के प्रभाव की गहरी समझ प्रदान करता है।

समस्या का विवरण : यद्यपि शिक्षा में वैश्विक सुधार हुआ है, फिर भी कई देशों में शिक्षा प्राप्ति और स्कूल-कॉलेजों में बेहतर प्रदर्शन के मामले में पुरुषों और महिलाओं के बीच अभी भी बड़ा अंतर है। महिलाओं,

विशेषकर ग्रामीण और अर्ध-शहरी वंचित क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं को कभी-कभी सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रतिबंधों के कारण शिक्षा प्राप्त करने में परेशानी होती है **(गुप्ता शालू, 2025)**। इसमें कुछ बाधाएँ हैं- पारंपरिक लैंगिक-भूमिकाएँ, कम उम्र में शादी हो जाना, आर्थिक रूप से कमजोर होना और समाज का यह दृष्टिकोण की लड़कियों की शिक्षा महत्वपूर्ण नहीं है। सफल नीतियों और हस्तक्षेपों को तैयार करने के लिए महिलाओं की शिक्षा को प्रभावित करने वाले सामाजिक-सांस्कृतिक तत्वों को समझना आवश्यक है। यह अध्ययन महिलाओं के शैक्षिक अनुभवों पर परिवार, समुदाय, आर्थिक स्थिति और सांस्कृतिक मानदंडो के प्रभाव, उनके सामने आनेवाली समस्याओं और अपर्याप्त महिला शिक्षा के व्यापक सामाजिक परिणामों की जांच करना चाहता है।

उद्देश्य :

1. राजगीर में महिलाओं की शैक्षिक उपलब्धि के स्तर पर आंकलन करना।
2. महिलाओं की शिक्षा को प्रभावित करने वाले सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों की पहचान करना।
3. शिक्षा प्राप्त करने और उसे जारी रखने में महिलाओं के सामने आनेवाली चुनौतियों का अध्ययन करना।
4. महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सामुदायिक जागरूकता और समर्थन तंत्र का विश्लेषण करना।
5. गुणवतापूर्ण शिक्षा तक महिलाओं की पहुँच में सुधार के उपाय करना।

साहित्य समीक्षा :

1. डॉ० मोनिका पंवानी (2017) ने "महिला सशक्तिकरण में उच्च शिक्षा" की भूमिका में कहा है कि शिक्षा महिलाओं के आत्मविश्वास, आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक भागीदारी को बढ़ाती है, लेकिन लिंग आधारित भेदभाव की निरंतरता पर भी ध्यान देती है।
2. भावना के० ब्रेंदे (2022) ने महिला कॉलेज छात्राओं द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं में पाया कि महिलाएँ अक्सर कई भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को निभाती है, जिससे शैक्षणिक तनाव और भेदभाव होता है।
3. सत्यनारायण खींची (2022) के अनुसार, 'भारत में महिला शिक्षा की वर्तमान स्थित, समाज की महिलाओं के प्रति रूढ़िवादी सोच, पारिवारिक और सामुदायिक बाधाओं के कारण शिक्षा के विभिन्न स्तर पर शिक्षा ग्रहण करने में महिलाओं के सामने चुनौतियाँ हैं।
4. शवाना अंजुम (2023) ने कहा कि लड़कियों की शिक्षा से जुड़ी विभिन्न बाधाओं को समाप्त करने की जिम्मेदारी केवल उच्च अधिकारियों की नहीं, बल्कि समाज के सभी वर्गों, सामुदायिक सदस्यों, गैर सरकारी संगठनों और भारत के नागरिकों की है। ये निष्कर्ष शिक्षा प्राप्त करने वाली महिलाओं के लिए निरंतर सहायता प्रणालियों की आवश्यकता पर बल देते हैं।

अध्ययन क्षेत्र : यह अध्ययन बिहार के 'नालन्दा' जिले में स्थित 'राजगीर' में किया गया है। इस क्षेत्र में आवासीय समुदाय और संस्थान दोनों शामिल हैं, जो इसे महिलाओं के शैक्षिक अनुभवों और आकांक्षाओं के अध्ययन के लिए आदर्श स्थल बनाता है 'राजगीर' भारत एवं बिहार का प्रमुख ऐतिहासिक पर्यटक स्थल है। यहाँ राजधानी 'पटना' एवं बौद्ध-स्थल 'गया' के रास्ते बस, टैक्सी और ट्रेन के माध्यम से जाया जा सकता है।

नमूने के चयन : छात्र-समूह का सही प्रतिनिधित्व पक्का करने के लिए प्रतिभागियों को चुनने के लिए 'पर्ससिव प्रतिचयन मेथड' का इस्तेमाल किया गया। सर्वे में कुल 55 जबाब मिले और डेटा को प्रश्नावली शीट का इस्तेमाल करके विश्लेषण किया गया।

अनुसंधान विधि : यह वर्णानात्मक अध्ययन एवं संरक्षित सर्वेक्षण है। आंकड़े संरचित प्रश्नावली के माध्यम से एकत्र किए गए हैं, जो बहुवैकल्पिक प्रश्नों से बनी थी और केवल राजगीर की छात्राओं को वितरित की गई थी। अध्ययन समूह में राजगीर के विभिन्न पाठ्यक्रमों में पढ़ने वाली छात्राएँ शामिल थी। छात्र समुदाय का निष्पक्ष प्रतिनिधित्व

सुनिश्चित करने के लिए प्रतिभागियों के चयन हेतु एक उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन पद्धति का उपयोग किया गया। सर्वेक्षण में कुल 55 प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुई और आंकड़ों का विश्लेषण किया गया।

डाटा का स्त्रोत :

प्राथमिक डाटा- संरक्षित प्रश्नावली के आधार पर एकत्रित आंकड़ा

द्वितीयक डाटा-पुस्तकों, लेखों और शोध पत्रों से एकत्रित

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण और तकनीकें : एक संरक्षित प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ा एकत्र किया गया है, जिसमें बहुविकल्पीय प्रश्न थे, जो राजगीर में केवल महिला छात्रों को वितरित किए गए थे।

शब्दों की परिभाषाएँ :

1. महिला शिक्षा-शिक्षा जो विशेष रूप से लड़कियों और महिलाओं पर केन्द्रित है, जिससे उन्हें ज्ञान, कौशल और व्यक्तिगत विकास प्राप्त करने में मदद मिलती है, जो उनके सशक्तिकरण और सामाजिक भागीदारी में योगदान देता है।
2. अधिकारिता-वह प्रक्रिया, जिसके माध्यम से महिलाएँ आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता और संसाधनों तथा अपने जीवन पर नियंत्रण प्राप्त करती है।
3. सामाजिक-आर्थिक कारक-किसी व्यक्ति के सामाजिक और आर्थिक जीवन के पहलू जैसे पारिवारिक आय, माता-पिता की शिक्षा व्यवस्था और सामाजिक स्थिति, जो शिक्षा तक उनकी पहुँच को प्रभावित करते हैं।
4. सांस्कृतिक कारक-परंपराएँ, विश्वास और सामाजिक मानदंड, जो शैक्षिक अवसरों को प्रभावित कर सकते हैं। जैसे लिंग भूमिकाएँ, कम उम्र में विवाह या पारंपरिक अपेक्षाएँ
5. चुनौतियाँ-महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने में आने वाली बाधाएँ या कठिनाईयां, जिनमें वित्तीय समस्याएँ, घरेलू जिम्मेदारियाँ, सुरक्षा संबंधी चिंताएँ या सहायता की कमी शामिल है।

विस्तार (दायरा) और सीमाएँ : यह अध्ययन विशेष रूप से राजगीर में नामांकित महिला छात्राओं के सामने आनेवाली विभिन्न चुनौतियों को समझता और उसका विश्लेषण करता है। यह एक अनुभवजन्य अध्ययन है, जो पूरी तरह से कई पाठ्यक्रमों पर केंन्द्रित है। यह अध्ययन छात्रों के अनुभवों को शामिल नहीं करता है। यह अध्ययन केवल छात्राओं के शैक्षणिक दबाव, लैंगिक पूर्वाग्रह, सुरक्षा संबंधी चिंताओं, वित्तीय बाधाओं, बुनियादी ढ़ांचे के मुद्दा, शारीरिक और मानसिक चुनौतियों और अन्य जिम्मेदारियों पर केन्द्रित है।

आंकड़ा विश्लेषण और व्याख्या

1. उत्तरदाताओं का आयु वितरण

आयु समूह	उत्तरदाताओं की संख्या	कुल प्रतिशत
18 वर्ष से नीचे	04	7.27
18-21	30	54.55
22-25	17	30
25 वर्ष से ऊपर	04	7.27
कुल	55	100

स्त्रोत-प्राथमिक आंकड़ा

उत्तरदाताओं का एक महत्वपूर्ण बहुमत (54.5 प्रतिशत) 18-21 की आयु के बीच है, जो दर्शाता है कि अधिकाश वर्तमान में स्नातक पाठ्यक्रम कर रही हैं यह आयु-वर्ग महिलाओं के उच्च शिक्षा पैटर्न को समझने में महत्वपूर्ण है। युवा उत्तरदाता (18 वर्ष से कम) की सक्रियता कम है।

2. उत्तरदाताओं का शैक्षणिक योग्यता

योग्यता	उत्तरदाताओं की संख्या	कुल प्रतिशत
उच्च माध्यमिक स्तर(10+2)	06	10.91
स्नातक	30	54.54
स्नातकोत्तर	14	25.45
व्यवसायिक शिक्षा	05	9.01
कुल	55	100

स्त्रोत-प्राथमिक आंकड़ा

अधिकांश महिलाएँ (54.54) स्नातक शिक्षा प्राप्त कर रही हैं, जो दर्शाता है कि उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। हालांकि स्नातकोत्तर (25.45) प्रतिशत और व्यवसायिक पाठ्यक्रमों (9.01 प्रतिशत) में महिलाओं की संख्या सीमित बनी हुई है। उक्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि शिक्षा तक पहुँच में सुधार तो हुआ है, लेकिन उन्नत और विशिष्ट अध्ययनों की निरंतरता अभी भी आर्थिक तंगी, कम उम्र में विवाह या पारिवारिक दायित्वों से प्रभावित है। उच्च शिक्षा को प्रोत्साहित करने वाली नीतियों और लचीले पाठ्यक्रम विकल्प स्नातक अध्ययन से आगे महिलाओं की प्रगति को बढ़ाने में मदद कर सकते हैं।

3. परिवार की संरचना का प्रकार

परिवार का प्रकार	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
संयुक्त परिवार	39	70.91
एकल परिवार	16	29.09
कुल परिवार	55	100

स्त्रोत-प्राथमिक आंकड़ा

दो तिहाई से अधिक (70.91) उत्तरदाता संयुक्त परिवारों से संबंध रखते हैं, जो राजगीर में परिवार के मामले ग्रामीण समाज के प्रभाव को दर्शाता है, जहाँ निर्णय लेने की प्रक्रिया अक्सर नियंत्रण में होती है। संयुक्त परिवारों में महिलाओं को शैक्षिक स्वतंत्रता कम, घरेलु जिम्मेदारियाँ अधिक और माता-पिता का प्रोत्साहन कम मिलता है। हालांकि एकल परिवारों के उत्तरदाताओं ने भी उल्लेख किया कि आधुनिक भूमिकाएँ अभी भी उनकी शैक्षिक प्राथमिकताओं को प्रभावित करती है जो सांस्कृतिक अपेक्षाओं और आधुनिक शिक्षा के बीच संतुलन को उजागर करता है।

4. मासिक पारिवारिक आय

आय स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
10000 से नीचे	10	18.18
10000-25000	24	43.64
25000-50000	13	23.64

50000 से अधिक	08	14.54
कुल	55	100

स्त्रोत-प्राथमिक आंकड़ा

महिलाओं की शिक्षा तक पहुँच में आय एक बड़ी भूमिका निभाती है। ज्यादातर उतर देने वाले 43.64 छात्राएँ ऐसे परिवारों से हैं जिनकी महीने की कमाई 10,000 से 25,000 रूपये के बीच है। कम आय वाले परिवारों की महिलाओं ने कॉलेज फीस, ट्रांसपोर्ट और पढ़ाई के सामान का खर्च उठाने मे दिक्कतें बताई। ज्यादा आय वाले पारिवारिक समूह (50,000 से अधिक) की महिलाओं को संसाधन और निजी संस्थाओं तक बेहतर पहुँच मिली। यह आंकड़ा शिक्षा के अवसरों में एक साफ सामाजिक-आर्थिक बंटवारा को दिखाता है, जो स्कॉलरशिप और सरकारी आर्थिक मदद के महत्व को बताता है। 10,000 से नीचे आय वाले पारिवारिक समूह से आने वाले छात्राओं के लिए परेशानियाँ कहीं अधिक है।

5. माता-पिता की शैक्षणिक पृष्ठभूमि

कोटि	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
माता-पिता दोनों शिक्षित	20	36.36
माता-पिता में से कोई एक शिक्षित	27	49.09
दोनो अशिक्षित	08	13.75
कुल	55	100

स्त्रोत-प्राथमिक आंकड़ा

लगभग 49.09 प्रतिशत जबाब देने वाले ऐसे परिवारों से आते हैं, जहॉ माता-पिता में से कोई एक पढ़े-लिखे हैं जबकि 36.36 प्रतिशत ऐसे परिवारों से आते हैं कि जिनके माता-पिता दोनों शिक्षित हैं। बिहार के अर्द्ध-शहरीकरण क्षेत्रों का सामान्य तौर पर यही निष्कर्ष है कि माता-पिता की शिक्षा सीधे तौर पर बेटियों की शिक्षा पर असर डालती है। जिन परिवारों में माता-पिता पढ़े-लिखे नहीं होत,े वे पढ़ाई-लिखाई के बजाय घर की जिम्मेदारियों को ज्यादा अहमियत देते हैं। पढ़े-लिखे माता-पिता शिक्षा के महत्व को समझते हैं और अपने बच्चों को भावनात्मक और आर्थिक मदद देते हैं। यह संबंध दिखाता है कि पीढ़ी-दर पीढ़ी साक्षरता राजगीर के युवा आकांक्षाओं पर बहुत असर डालती है।

6. शिक्षा के तरीके की प्राथमिकता

तरीका	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
नियमित	43	78.18
दूर शिक्षा/ऑनलाईन	12	21.82
कुल	55	100

स्त्रोत-प्राथमिक आंकड़ा

ज्यादातर 78.18 लोग बेहतर सीखने के अनुभव और सामाजिक अंतःक्रिया के कारण नियमित शिक्षा पसंद करते हैं, हालांकि 21.82 प्रतिशत छात्राओं ने आर्थिक दिक्कतों या घरेलू कार्यों में व्यस्त होने के कारण दूरस्थ या ऑनलाईन शिक्षा को चुना। उक्त आंकड़ा यह दिखाता है कि लचीले शिक्षा व्यवस्था महिलाओं को तब भी सीखने में मदद कर सकते हैं जब चुनौतियों के कारण वे नियमित वर्ग कक्षा में शामिल नहीं हो पाती हैं।

7. शिक्षा की प्रेरणा और कोशिश

श्रोत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
माता-पिता	28	50.91
स्वयं प्रेरित	14	25.45
शिक्षक	08	13.75
दोस्त	05	9.09
कुल	55	100

स्त्रोत-प्राथमिक आंकड़ा

राजगीर में महिलाओं की शिक्षा के लिए माता-पिता का प्रोत्साहन 50.91 प्रतिशत सबसे बड़ा प्रेरक बनकर उभरा। खुद से प्रेरित होकर शिक्षा पाने वाली 25.45 प्रतिशत महिलाओं का बढ़ता आत्मविश्वास और स्वतंत्रता दिखाई देती है। हालांकि साथियों और शिक्षकों से प्रेरणा पाने वाले छात्राएँ कम थी, जो स्थानीय संस्थाओं में मजबूत अकादमिक मार्गदर्शन और भूमिका मॉडल की आवश्यकता को दर्शाता है।

8. शिक्षा जारी रखने की चुनौतियाँ

बाधाएँ	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
आर्थिक बाधाएँ	20	36.36
घरेलू उतरदायित्व	12	21.82
सुरक्षा मुद्दा	08	14.55
मदद की कमी	15	27.27
कुल	55	100

स्त्रोत-प्राथमिक आंकड़ा

महिला छात्राओं के समक्ष आर्थिक समस्याएं और परिवार की सहायता न मिलना, ये ऐसी चुनौतियाँ हैं जो महिलाओं को शिक्षा ग्रहण करने से रोकती है। कई ऐसी महिलाएँ जिनके सामने सम्मलित रूप से आर्थिक बाधाएँ, घरेलू उतरदायित्व का बोझ और सहायता की कमी तीनों की चुनौतियाँ हैं। परंतु प्रमुखता अलग-अलग चुनौतियों को दिया। कई छात्राओं ने कॉलेज जाते समय सुरक्षा संबंधित चिंताओं को व्यक्त किया। इन आंकड़ों से ज्ञात होता है कि आधुनिक समय मे छात्राओं के सामने परंपरागत और आधुनिक चुनौतियाँ दोनों हैं।

9. शैक्षणिक तनाव का स्तर

स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
उच्च	16	29.09
मध्यम	23	41
निम्न	16	29.09
कुल	55	100

स्त्रोत-प्राथमिक आंकड़ा

आंकड़े बताते हैं कि ज्यादातर 41 प्रतिशत छात्राओं को मध्यम स्तर का शैक्षणिक तनाव होता है। यह तनाव पढ़ाई, घर के कामों और अंशकालिक काम-धंधा के बीच संतुलन बनाने से होता है। अधिक तनाव अक्सर शैक्षणिक प्रदर्शन के दबाब और अकादमिक काउंसलिंग (शैक्षणिक परामर्श) की कमी से जुड़ा होता है। छात्र कल्याण कार्यक्रमों को शुरु करने से इन चिंताओं को प्रभावी रूप से दूर किया जा सकता है।

10. सरकारी शैक्षणिक कल्याण योजना के प्रति जानकारी

प्रतिक्रिया (जबाब)	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
हाँ और लाभ उठाया	12	21-82
हाँ पर लाभ नहीं उठाया	20	36-36
नहीं	23	41-82
कुल	55	100

स्त्रोत-प्राथमिक आंकड़ा

सर्वे में शामिल आधे से थोड़े कम छात्राएँ यानि 41.82 प्रतिशत, बिहार सरकार के स्कॉलरशिप योजना 'छात्रा-प्रोत्साहन योजना' और 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' जैसे सरकारी कार्यक्रमों से अनजान थे जबकि 36.36 प्रतिशत ऐसी छात्राएँ हैं, जिन्हें तो जानकारी है, पर लाभ पाने की प्रक्रियाओं की प्रशासनिक पेचीदगीयों के कारण उसका लाभ नहीं उठा सकीं। आंकड़े बताते हैं कि जागरूकता की कमी और प्रशासनिक जटिलताएँ लोगों को लाभ के पहुँच से बाहर करता है अतः इसे सरकारी स्तर पर दूर करने की आवश्यकता है।

अनुसंधान :

1. अधिकांश उत्तरदाताओं की आयु 18-21 वर्ष के बीच है। अधिकांश महिला उत्तरदाता कॉलेज जाने वाली आयु वर्ग की हैं, जिसमें राजगीर की युवा महिलाएँ शामिल हैं, जो सक्रिय रूप से उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। इससे ज्ञात होता है कि महिलाओं का शैक्षणिक विकास के प्रति सक्रियता और रुचि बढ़ रही है।
2. आंकड़ें यह बताते हैं कि स्नातक शिक्षा महिलाओं के बीच सबसे लोकप्रिय है। आधे से अधिक उत्तरदाता स्नातक पाठ्यक्रम पूरा कर रहे हैं जो दर्शाता है कि बुनियादी उच्च शिक्षा तक पहुँच में सुधार हुआ है, हालांकि स्नातकोत्तर या व्यवसायिक स्तर की शिक्षा प्राप्त करने वालों की संख्या कम है। क्योंकि स्नातक के बाद विभिन्न सरकारी स्तर की नौकरियों के दरवाजे खुल जाते हैं।
3. अधिकांश उत्तरदाता आधुनिक संयुक्त परिवार से संबंध रखती हैं। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि बिहार के कस्बाई क्षेत्रों में महिलाओं को संयुक्त परिवार वाली मानसिकता तथा जीवन पद्धति नियंत्रित कर रही है, जो महिलाओं के शैक्षणिक विकास में कमोवेश बाधाएँ हैं। हालांकि आधुनिक संयुक्त परिवार परंपरागत संयुक्त परिवार से काफी उदार है।
4. आर्थिक पृष्ठभूमि शिक्षा पर असर डालती है, कम और मध्यम आय वाले परिवारों की महिलाओं को कॉलेज की फीस देने और अच्छे संस्थाओं में नामांकन लेने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिससे यह साबित होता है कि पारिवारिक आय शिक्षा जारी रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
5. माता-पिता के शैक्षणिक स्तर का बेटी की पढ़ाई पर असर डालता है। शिक्षित माता-पिता की बेटियाँ ज्यादा प्रेरित होती है और उन्हें बेहतर शैक्षणिक सहायता मिलती है जबकि कम पढ़े-लिखे या अनपढ़ माता-पिता अपनी लड़कियों की औपचारिक शिक्षा को कम महत्व देते हैं।
6. ज्यादातर जबाब देने बाली छात्राएँ दूरस्थ या ऑनलाईन लर्निंग के बजाए नियमित कक्षा में जाना ज्यादा पसंद करती हैं क्योंकि नियमित कक्षाओं में बेहतर आदान-प्रदान, अनुभव और सीखने के मौके मिलते हैं।
7. माता-पिता का प्रोत्साहन एक बड़ा प्रेरक कारक है। आधे से ज्यादा जबाब देने वालों ने बताया कि उनके माता-पिता उन्हें पढ़ाई के लिए प्रेरित करने में अहम भूमिका निभाते हैं, जो महिलाओं की शिक्षा में परिवार से सहायता की अहमियत को दिखाता है।

8. आर्थिक और घरेलु समस्याएँ मुख्य बाधाएँ हैं। अनेक जबाब देने वालों को पैसे की कमी, पारिवारिक पाबंदियों जैसे समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जो अक्सर उनकी पढ़ाई में रुकावट डालती है या पढ़ाई छोड़ने का कारण बनती है।
9. अनेक छात्राओं को मध्यम शैक्षणिक तनाव होता है। काफी सारी महिलाओं ने शैक्षणिक दबाव, बहुकार्यीय और पढ़ाई के साथ-साथ पारिवारिक जिम्मेदारियों को संतुलित करने की वजह से तनाव की बात कही, जिसे बेहतर परामर्श और सहायता-व्यवस्था की जरूरत महसूस होती है।
10. यहाँ की छात्राओं में अधिकतर के पास डिजिटल डिवाइस और इंटरनेट तक सीमित या सम्मिलित पहुँच है, जिससे वे ऑनलाईन क्लास और लर्निंग में हिस्सेदारी आसानी से नहीं ले पाते हैं।
11. सरकारी शिक्षा योजनाओं के बारे में जागरूकता कम है और प्रशासनिक बाधा भी है। जबाब देने वाली छात्राएँ बड़ी संख्या में केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा चलाए जा रहे स्कॉलरशिप एवं शिक्षा प्रोत्साहन योजनाओं के बारे में नहीं जानती हैं तथा अनेक छात्राएँ जानने के बावजूद पहुँच में जटिल प्रक्रिया के कारण इसके प्रति उदासीन हैं। अतः इसे दूर किए जाने की जरूरत है।
12. ज्यादातर महिलाएँ पढ़-लिख कर नौकरी करना चाहती हैं। सरकारी नौकरी उनकी प्रथम प्राथमिकता है। इससे पता चलता है कि पढ़ाई आर्थिक आजादी माना जाता है।
13. यद्यपि राजगीर का अध्ययन यह बताता है कि अधिकतर छात्राएँ आर्थिक तंगी और घरेलु कार्यों के बोझ से जूझ रही हैं तथा अधिकतर छात्राएँ पारंपरिक सोच वाले परिवार से हैं तथापि महिलाओं की शिक्षा के प्रति माता-पिता का नजरिया साकारात्मक है, आर्थिक समस्या के बावजूद ज्यादातर परिवार अब अपनी बेटियों को पढ़ाई-करने और कैरियर बनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, जो समानता की तरफ पारंपरिक सोच में धीरे-धीरे आ रहे बदलाव को दिखाता है।
14. शिक्षा से आत्मविश्वास और सशक्तिकरण बढ़ता है। लगभग सभी उतर देने वाली महिलाओं ने यह माना कि शिक्षा ने उनके आत्मविश्वास, फैसले की क्षमता और समाजिक भागीदारी को बेहतर बनाया है।
15. राजगीर में महिलाएँ चुनौतियों से निपटने के लिए दृढ़ निश्चयी हैं। पैसे और समाज की मुश्किलों के बावजूद ज्यादातर महिलाएँ अपनी पढ़ाई जारी रखने और निजी और व्यवसायिक वृद्धि पाने का पक्का इरादा दिखाती हैं।

सुधार के लिए सुझाव :

1. वित्तीय सहायता और स्कॉलरशिप के मौके बढ़ाएँ जाय। सरकार और शिक्षण संस्थाओं को कम आय वाले परिवारों की महिलाओं को बिना किसी वित्तीय तनाव के अपनी पढ़ाई जारी रखने में मदद करने के लिए पर्याप्त स्कॉलरशिप, फीस की छूट और वित्तीय योजना देने चाहिए।
2. शैक्षणिक प्रोत्साहन योजनाओं और कल्याण कार्यक्रमों के बारे में जागरूकता बढाएँ तथा योजना का लाभ पाने की प्रक्रिया को सरलतम बनाएँ। कई महिलाओं को उपलब्ध सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी नहीं है। तथा कई ऐसे हैं, जिनको जानकारी है भी तो वे पहुँच की प्रक्रिया में जटिलताओं के कारण उसका लाभ नहीं उठा पाती हैं। स्कूलों, कॉलेजों और स्थानीय सामुदायिक केन्द्रों के जरिए जागरूकता अभियान चलाने से यह पक्का हो सकता है। साथ ही छात्राओं और उनके माता-पिता को महिलाओं की शिक्षा के लिए मिलने वाले फायदों और अवसरों के बारे में जानकारी मिले।
3. महिला छात्रों के लिए सुरक्षा और ट्रांसपोर्ट सुविधाओं को मजबूत किया जाय। भरोसेमंद पब्लिक ट्रांसपोर्ट और शैक्षणिक संस्थाओं के आस-पास सही सुरक्षा उपाय सुनिश्चित किये जाने चाहिए, ताकि महिलाएँ आजादी से और सुरक्षित रूप से यात्रा कर सकें।

4. डिजिटल साक्षरता और ऑनलाईन लर्निंग तक पहुँच को बढ़ावा दें। कॉलेजों में महिलाओं को डिजिटल हुनर बेहतर बनाने के लिए प्रशिक्षण प्रोग्राम प्रारंभ करने चाहिए और डिजिटल बाधा को खत्म करने के लिए डिवाइस और इंटरनेट जुड़ाव तक किफायती पहुँच प्रदान करने चाहिए।
5. आजीविका परामर्श और सलाह की सुविधायें दें। कैरियर परामर्श, सलाह प्रोग्राम और सॉफ्ट-स्किल प्रशिक्षण महिलाओं को पढ़ाई और आजीविका से जुड़े बेहतर फैसले लेने में मदद कर सकते हैं और उन्हें रोजगार हेतू बाजार के लिए तैयार कर सकते हैं।
6. माता-पिता की भागीदारी और परामर्श कार्यक्रम को बढ़ावा दें। माता-पिता के लिए वर्कशॉप और परामर्श सत्र आयोजित किए जा सकते हैं ताकि उन्हें महिलाओं की शिक्षा के महत्व को समझने में मदद मिल सके और कैसे उनका प्रोत्साहन उनकी बेटी के शैक्षणिक सत्र पर सकारात्मक असर डाल सकता है, इसकी जानकारी होगी।

निष्कर्ष : राजगीर में महिलाओं की शिक्षा पर किए गए अध्ययन से यह स्पष्ट पता चलता है कि शिक्षा महिलाओं की जिंदगी को आकार देने और समाज में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में भूमिका अदा कर रहा है। यहाँ की महिलाएँ उच्च शिक्षा पाने में गहरी रुचि दिखा रही हैं और ये इसे सीखने, सशक्तिकरण, आत्मविश्वास और आजादी का रास्ता मानती हैं। परन्तु पैसे की तंगी, परिवार की जिम्मेदारियाँ और सरकारी योजनाओं की जानकारी का अभाव इनके लिए रुकावटें बनी हुई है। नतीजों से पता चलता है कि माता-पिता का हौसला और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि महिलाओं की शैक्षणिक प्रगति तय करने में अहम भूमिका निभाते हैं।

बढ़ती जागरूकता और आधुनिकता के साथ, समाज में महिलाओं की शिक्षा के बारे में सोच में काफी सुधार हुआ है। ज्यादातर माता-पिता अपनी बेटियों की पढ़ाई को समर्थन करते हैं। ज्यादातर महिलाएँ आत्मनिर्भर बनना चाहती हैं, परंतु महिलाओं के इस चाहत को पूरा करने के लिए सरकार को कृतसंकल्प होना होगा और ठोस पॉलिसी पर काम करना होगा। आज जरूरत यह है कि महिलाओं को अच्छी गुणवता की शिक्षा, सीखने का सुरक्षित माहौल और डिजिटल संसाधन तक नियमित पहुँच मिले।

अगर बेहतर आर्थिक मदद, सुरक्षा उपाय, डिजिटल समावेशन और रोजगार के निर्देशन जैसे सिफारिशों को प्रभावी ढंग से लागू किया जाता है, तो राजगीर एक मॉडल इलाका बन सकता है जहाँ महिलाएँ सही में शैक्षिक और सामाजिक सशक्तिकरण हासिल कर सकती हैं। जब शिक्षा को अवसर और जागरूकता के साथ जोड़ा जाता है, तो इसमें महिलाओं के जीवन में स्थायी बदलाव लाने और पूरे समाज को प्रगति करने में सफलता मिल सकती है।

संदर्भ :

1. Mondal, Provashis, Status of Women in Higher Education, IJCRT, Voloum, Issue7, July 2011.
2. Desai, A.S (1999) Women in Higher Education and National Development, University news, AIU, Vol 39, No.9, March 1999.
3. गुप्ता, शालू, महिला शक्तिकरण में उच्च शिक्षा की भूमिका (IJARPS) भाउलूम 4] अंक 04] अप्रैल 2025-
4. Dr. Monika Panchani (2017) Role of Higher Education in Power Empowerment.
5. Bhavana K. Bendre (2022), Prolem faced by Female College Students
6. सत्यनारायण सींची (2023) लड़कियों की शिक्षा की बाधाएँ।
7. P. Gupta & S. Sharma (2020) Barriers to Women's Education in Developing Regions.

•